Golden Research thoughts
Volume 2, Issue. 1, July 2012
ISSN:-2231-5063

Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

समस्या नाटकों का शिल्पपक्ष

राजश्री राजकुमार महिमकर

Email : rajkumarm67@yahoo.com

प्रस्तावना :–

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवी शताब्दी के आरम्भ में औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरुप योरोपीय समाज जीवन में महान परिवर्तन हुए। यहाँ संघर्ष की परिस्थिती निर्माण हो गयी थी। जनता में बौद्धिक क्रांन्ति की नयी लहर जागृत हुई थीं। इसी कारण परम्परा से चले आ रहें मान्यताओं को नया रुप मिला। पारंपारिक रुढीवादी रोमांचकता पूर्ण नाटकों के बदले यथार्थवादी समाज की ज्वलन्तता को प्रकट करने वाले समस्या नाटक निर्माण हुए। पारंपारिक नाटकों के शिल्प पक्ष से भिन्न समस्या नाटकों का शिल्प है।

• कथानक :–

समस्या नाटकों के कथानक में बदलाव आ गया। पुराने नाटकों में कथातत्व की प्रधानता थी। पात्र के मुख से सीधे–सीधे कहानी सुनाई जाती थी। समस्या नाटकों में कथातत्व की जगह विचारतत्व ने ली। कथा को सिर्फ विचार के प्रस्तुतिकरण के लिए अवलम्बित रुप में लिया गया। विचार या बौद्धिकता समस्या नाटक के कथानक आवश्यक है। मगर विचारतत्व पर जादा जोर देने के कारण कई बार ऐसा भी हो सकता है कि, कथानक शिथिल होकर नाटक कथानक विहिन बन सकता है। बर्नाड शा का 'गेटिंग मैरेड' इसीका उदाहरण है।

पुराने कथानक में परंपरा के अनुसार आरम्भ, मध्य और अन्त होता था। समस्या नाटकों में यह क्रम भंग होता दिखाई देता है। पुराने नाटकों का अन्त समस्या नाटकों में आरम्भ बनकर आया। जैसे पुराने नाटकों में नायक तथा नायिका का प्रेम क्रिया– व्यापार दिखाकर अन्त में विवाह दिखाया जाता था; किन्तु नये नाटकों में विवाह से ही आरंभ होने लगा। विवाह की परस्पर–विरोधी प्रवृत्तियों तथा उनसे उत्पन्न बिकट परिस्थितियों से जुझनेवाले पात्रों के दैनिक जीवन की घटनाओं तथा क्रिया व्यापार, संवाद से नाटक आगे बढता गया। वैवाहिक जीवन के वैचारीक पहलू को सामने लाया गया। पुराने नाटकों मे कथातत्व प्रधान होने के कारण उन्हें 'ऐक्शन प्लॉट' कहा जाता था, परन्तु नये नाटकों में विचार प्रधान होने के कारण उन्हें 'आयडिया प्लॉट' कहा गया। इन नाटकों में से विचार प्रदर्शित होता था, वह सामायिक जीवन से जुडा हुआ था। विचार की एकता अखंडता पर पूरी तरह बल दिया गया।

पुराने नाटक के कथानक विशिष्ट वर्ग या विशिष्ट व्यक्ति तक सीमित होते थे; किन्तु नये नाटक के कथानक सामान्य वर्ग या जन–जीवन से लिये जाने लगे। ऐसे सामान्य पात्र चुने गये कि वे समाज के बहुसंख्यांक वर्ग के प्रतिनिधित्व करते थे।

प्रस्तुत नाटकों में पुराने नाटकों की तरह एकान्वित पर जादा जोर नहीं दिया गया। देश–काल संबंधी सभी शर्ते टूट गयी। इब्सन एकान्विति तत्व का आरम्भ से ही बहिष्कार करता था। 'घोस्टस', 'पिलर्स ऑफ सोसायटी' तथा 'डाल्स हाऊस' इसके उदाहरण है।

आर.सी. गुप्ता के अनुसार 'The structure of a problem play ought to be a complete and organic whole, with a clearly marked central interest to which everything else is duly subordinated'

अर्थात 'मुख्य विषय अत्यन्त सन्तुलित और कलात्मकता से प्रस्तुतिकरण समस्या नाटक का परिपूर्ण तथा अविभाज्य अंग बन गया।' समस्या नाटकों का अन्त विश्मयजनक विचारोत्तेजक होता है। सुखद या दुखद अन्त की बजाय दर्शक या पाठक एक विचार लेकर लौटते है।

Please cite this Article as : *राजश्री राजकुमार महिमकर ,समस्या नाटकों का शिल्पपक्ष* **: Golden Research Thoughts (July; 2012)**

• ***संघर्ष :–***

प्रारंभ से ही संघर्ष नाटक का मुलाधार रहा है। समस्या नाटक में सारांश के उद्घाटन के लिए 'संघर्ष और संवाद' दो मूलतत्व आवश्यक हैं। आर.सी. गुप्ता के अनुसार 'Aristotle felt that without action there can not be a tragedy- tragedy is an imitation not of men but of action of life and life consists in action'

अर्थात 'अरस्तू ने नाटक को मानव का नहीं वरन् उसके संघर्ष की अनुकृति कहा है। इस संघर्ष में जीवन का अस्तित्व है जिसकी प्रतिच्छाया नाटकों में दिखायी देती है।' समस्या नाटकों में संघर्ष पूर्णतः बौद्धिक होता है। उसकी उत्पत्ति दो विचार या मतों के अर्न्तद्वन्दव के कारण होती है। समस्या नाटकों मे प्रभावी संवादों के माध्यम से बद्धिवादी विचार सिद्धान्त का प्रक्षेपण होता है। मूल में एक संघर्ष हृदयजन्य होता है तो दूसरा विचारजन्य, एक का परिणाम हृदय पर होता है तो दूसरे का परिणाम मस्तिश्क पर होता है। पात्रों की शक्तिगत वैशिष्टय पर ध्यान नहीं दिया गया।

संघर्ष के विविध स्तर होते हैं। कभी कभी मानव मन की उच्चतर भावनाओं का भी विश्लेषण किया जाता है। गाल्सवर्दी इस प्रकार के संघर्श के सफल प्रयोक्ता है। जैसे 'जस्टीस' में फाल्डर और रुथ के माध्यम से रुढीशासित समाजव्यवस्था, न्यायव्यवस्था के कारण उत्पन्न सामाजिक विषमताओं के प्रति विद्रोह के भाव भर उठते है।

कई बार संघर्ष की द्वन्द्व अवस्था के कारण नायक या नायिका अन्तिम निर्णय नहीं ले पाते। छटपटाते हुए दिखाये देते हैं। जैसे उपेन्द्रनाथ अश्क कृत 'कैद' में अप्पी की अवस्था दिखायी देती हैं। कई बार अन्तर्गत द्वन्द्व अवस्था में एक निर्णय लेकर संघर्ष से छुटकारा भी पा सकते है। जैसे विष्णु प्रभाकर कृत 'डॉक्टर' में अनिला या उपेन्द्रनाथ अश्क कृत 'उडान' की माया। अन्तरिक संघर्ष उच्च और श्रेष्ठ कोटी का होता है। इसके साथ ही बाह्य संघर्ष होता है। जो पुरातन मान्यताओं के विरोध में उत्पन्न होता दिखायी देता हैं। विवाह, प्रेम, सामाजिक विषमता, मान्यताएँ, रुढी, शिक्षा आदि से सम्बन्धित यह संघर्ष उत्पादित होता हैं। दो विरुद्ध विचारप्रवाह के कारण संघर्ष छिडता हैं। किसी एक विचार का निर्वाह नहीं होता। संघर्श समस्या नाटक का मूलतत्व हैं। इसके बिना नाटक बेजान होता है। रोमान्टिक नाटकों मे जो स्थान भावनाओं का है, वहीं स्थान समस्या नाटकों में संघर्ष का है।

• ***क्रिया–व्यापार :–***

जिस प्रकार समस्या नाटक में संघर्ष बौद्धिक होता है, उसी प्रकार क्रिया–व्यापार बौद्धिकता से नियंत्रित होता है। शास्त्रीय नाटकों मे क्रिया व्यापार का आदर्श प्रस्तुतिकरण होता है। दुखान्त नाटकों में भी क्रिया–व्यापार को सर्वोपरी महत्व दिया गया, क्योंकि आवेगजन्य क्रियाओं के वैचित्र में ही दशकों के ध्यान को उलझाये रखना वहाँ लेखकों का उद्देश्य रहा। यहाँ भावना को प्राधान्य दिया गया था। किन्तु समस्या नाटकों का क्रिया व्यापार बौद्धिकजन्य होता है। इन नाटकों में लेखक के मतव्य को सर्वग्राह्य बनाने की दिशा में संकेत करनेवाली क्रियाओं की योजना की जाती है। जिस प्रकार दुखान्त नाटकों में अप्रत्यक्षित परिस्थितीयों की योजना की जाती, किसी अनचाही घटना का अचानक घट जाना और किसी प्रतिकूल क्रिया के सम्पन्न हो जाने से दुखान्त तत्वों की सृष्टी होती है और दर्शक या पाठक उन भावों की संवेदनीयता से विव्हल हो उठता हैं, ऐसी बात समस्या नाटकों मे नहीं होती। इन नाटकों में असम्भवित और अलौकिक की चर्चा भी नहीं होती। समस्या नाटक का समस्त कार्य–व्यापार वास्तविक और लेखक की बुद्धिवादी मान्यता की पुष्टी होती है। प्रस्तुत नाटकों का अन्त मुख्य प्रयोजन के स्थापना के साथ ही होता है। शास्त्रीय नाटकों के अन्त में जीवन के शाश्वत मूल्यों को दिखाया जाता है। दुखान्त नाटकों के अन्त में मर्मस्पर्शी चित्ताकर्शक भावूकप्रधान दृश्य दिखाये जाते है। वहीं समस्या प्रधान नाटकों का अन्त बौद्धिक एवं वैज्ञानिक दृष्टी से प्रेरित किसी विचारोत्तेजक क्रिया कलाप के साथ ही होती है। प्रस्तुत नाटक में पाठक या दर्शक की विचारशक्ति को जबर्दस्त धक्का दिया जाता है। पाठक को नाटक के आरम्भ से अन्त तक सोचने के लिए विवश कर देता हैं। इब्सन कृत 'डाल्स हाऊस' में पुरुष प्रधान हेल्मर द्वारा अपमानित नोरा का असह्य दाम्पत्य जीवन दिखाया है। यथार्थ को प्रेरणा देनेवाले विचारों के साथ नाटक के अन्तिम क्रिया–व्यापार की समाप्ति होती है।

बौद्धिक क्रिया व्यापार के कारण समस्या नाटक केवल पढकर ही शास्त्रीय या रोमान्टिक नाटकों से जादा प्रभावशाली बनते हैं। मगर कभी कभी अतिबौद्धिकता के कारण नाटक में क्रियाशून्यता खटकती है। समस्या नाटक का कार्यव्यापार से सामाजिक उत्क्रान्ति को प्रेरणा मिलती है। लक्ष्मी नारायण मिश्र कृत 'सिन्दूर की होली', 'मुक्ति का रहस्य', 'सन्यासी'.... ऐसे कई नाटक बुद्धिवाद का प्रमाण हैं।

• ***संवाद***

समस्या नाटकों में संवादों को सबसे अधिक महत्व दिया जाता हैं। समस्या नाटक में क्रियाओं के स्थान पर विचार द्वन्द्व को ग्रहण किया। विचारों को प्रकट करने के लिए सशक्त संवादों की आवश्यकता होती है। दूखान्त नाटकों के संवाद कल्पना भावुकता तथा आवेगपूर्ण और चित्ताकर्शक थे; किन्तु उसमें जीवन की वास्तवता, यथार्थता प्रकट करने का सामर्थ्य न था। समस्या नाटक सामाजिक प्रश्नों पर हल ढूँढने का प्रयास करते हैं। जीवन सत्य को उद्घाटित करते हैं। सहजता, सरलता, सादगीयुक्त संवाद होते हैं। समस्या नाटकों में विषयवस्तु या कथानक के प्रतिपादय को प्रकट करने का श्रेय समस्या नाटकों के संवादों में हैं। अतः हम कह सकते हैं कि संवाद समस्या नाटक की रीढ है। समस्या नाटक का स्वर सामाजिक होने के कारण संवादों मे मूल शक्ति सामाजिक व्यंगों की चोट तथा परंपरा के विरोध में निर्भिक स्वर से उठते हैं। समस्या नाटकों में अन्य तत्वों पर संवाद की प्रबलता होती हैं। क्योंकि नाटककार उद्देश्य चरित्र की अभिव्यक्ति नहीं होती बल्कि विचारों की अभिव्यक्ति होती है।

समस्या नाटक के संवाद नाटककार के वैयक्तिक सिद्धान्त, मान्यताएँ और विचार के परिचायक होते हैं। नाटक की सफलता, प्रभान्विती सशक्त संवाद पर निर्भर रहती है। गाल्सवर्दी के संवाद कलात्मक और साहित्यिक सौष्ठव से ओतप्रोत हैं। इब्सन के संवाद बाद्धिकता के कटे–छटे नमुने होने पर भी साहित्यिक सरसता सहजता के उत्कृष्ठ नमुने हैं। संवादों की प्रधानता को सबसे अधिक प्रभावशाली सिद्ध करनेवाले बर्नाड शा हैं।

संवादों के द्वारा नाटककार अपने विचारों की झडी लगाता हैं, और अंत में अपने मत का प्रस्थापन कर नाटक समाप्त करता है। संवादों मे स्वगत कथन की परंपरा आरम्भ से चली आ रही है। रोमांटिक नाटकों में अंतरिम भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए यह एक उपयुक्त माध्यम रहा है। समस्या नाटक में स्वगत कथन, गीत योजना नहीं दिखायी देती; किन्तु कहींपर लम्बे संवादों मे स्वगत कथन दिखाई देते है।

• ***चरित्र***

दूखान्त नाटकों में चरित्र–तत्व को प्रधानता दी जाती है; किन्तु समस्या नाटकों में इसे सबसे कम महत्व दिया जाता है। समस्या नाटक में नाटककार अपने विचारों के वहन के लिये पात्रों को माध्यम बनाता है। समस्या नाटक चरित्र का अस्तित्व केवल बौद्धिक मान्यता को सशक्त

बनाने में सहाय्यक होने के लिए होता है। चरित्र की अपनी विशेषताएँ नहीं प्रकट की जाती। बर्नाड शा ने चरित्रों की स्वच्छन्दता पर सबसे अधिक प्रहार किया। समस्या नाटक में पाठक पात्रों की बजाय यह सोचता है की, पात्र क्या कहना चाहता है?समस्या नाटक में चरित्र केवल विचारों का वाहक ही होता है। इन चरित्रद्वारा समाज–जीवन के ज्वलन्त प्रश्नों जैसे सेक्स, नैतिकता, शिक्षा पद्धति आदि पर विचार होता हैं। ये पात्र सामुहिक जीवन के प्रतिनिधी बनकर सामने आते हैं।

•भूमिका, दृश्य वर्णन, रंगमंच संयोजन, भाषा शैली

नाटय–साहित्य में परिवर्तन के अनुसार शिल्प में जो परिवर्तन आया उनका प्रभाव केवल चरित्र, क्रिया व्यापार, संवाद आदि पर न पडकर नाटकों के बाह्य विधान पर भी हुआ। बौद्धिकता की प्रबलता होने के कारण नाटक के आरम्भ में लम्बी भुमिकाएँ जुडी जाने लगीं। भूमिका का उपयोग केवल नाटक के मूल मतव्य की ओर इंगित करनेवाली वस्तु के रुप में होना चाहियें।

इन नाटकों में दूसरी नयी वस्तु दृश्य–विधान हैं। समस्या नाटक के दृश्य प्रायः ऐसे होते हैं, जिनसे समाज में व्याप्त अन्याय और विकृतियों का उद्घाटन हो सकें; और इन दृश्यों के माध्यम से पाठक नाटककार के विचारों को जीवन की ग्राह्यता के स्तर पर अपना लें।

समस्या नाटक में दृश्य या अंक के आरम्भ में रंगमंच निर्देश दिखाई देते हैं। इस निर्देश का उपयोग भी प्रभावोत्पादन के लिये ही है। निर्देश के कारण नाटकीय दृश्य की वातावरण की निर्मिती होती है।

समस्या नाटक के पात्र सामान्य वर्ग के होने के कारण प्रस्तुत नाटक की भाषा समाज मान्य भाषा का प्रयोग किया जाता है। वार्तालाप का स्वाभाविक रुप इन नाटकों मे दिखायी देता हैं।

रचना–विधान भी महत्वपूर्ण है। समस्या नाटक तीन ही अंकों में पूरी तरह समेटा जाता हैं। नाटकों मे बहुदा पूरा नाटक एक ही स्थान पर एक ही दृश्य के साथ अभिनित किया जा सकता है।

संदर्भ :–

1) डॉ. शान्ति मलिक – 'समस्या नाटकों की शिल्पविधि'
2) त्रिपाठी बच्चन – 'हिंन्दी नाटक और लक्ष्मीनारायण मिश्र'
3) R.C. Gupta - 'The problem play'